

Name - Prajya Raj

Time - 40 min

Roll no. - 230005

Marks - 16

Class - B.Ed 1st year

Date - 26/09/23

Q. Has the concept of childhood been always same or it change with time. Analyse with example.

Ans → According to United Nations Convention on the Rights of the Child states that a child is any person under the age of eighteen. Childhood has thus been identified as a stage of life, associated with chronological age, located between infancy and youth and including adolescence.

"Don't limit a child to your own learning, for he was born in another time."

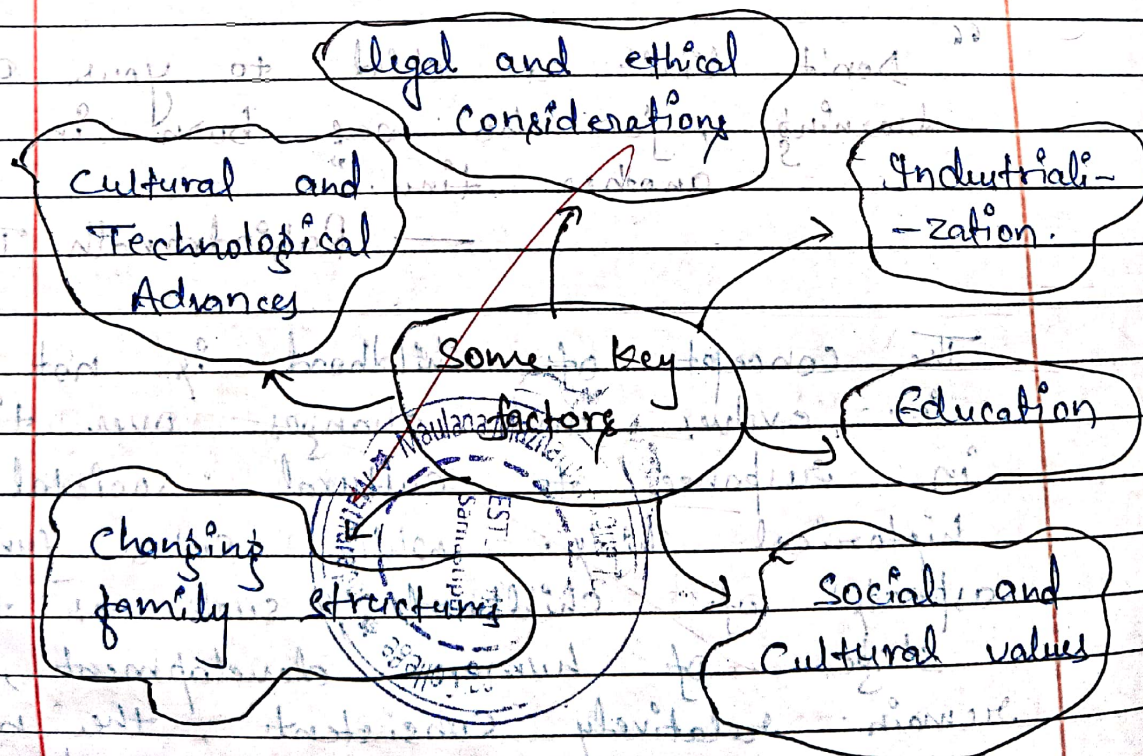
— Rabindranath Tagore

The concept of childhood is not static, it evolves and changes over time in response to cultural, societal and historical shifts. While some fundamental aspects of childhood such as the stages of human development, remain relatively consistent, the way childhood is perceived, experienced and

Understood Can Vary significantly from one era to another and across different cultures.

Historically, childhood was often viewed differently than it is today. In many ancient societies, children were considered miniature adult responsibilities at a young age. There was little distinction between childhood and adulthood in terms of societal roles and expectations.

However, several key factors have contributed to change in the concept of childhood over time:



→ Industrialization :-

The Industrial Revolution in the 18th and 19th centuries brought about significant changes in the way society viewed childhood. Child labour laws were enacted to protect young workers from dangerous conditions, highlighting the need to safeguard their well-being.

→ Education :-

The establishment of compulsory education systems in many parts of the world shifted the focus of childhood towards formal learning and development. This marked a significant change from earlier periods when education was often limited to the elite.

→ Cultural and Technological Advances :-

Advances in technological, communication, and media have shaped the experiences of contemporary childhood. The digital age, in particular, has introduced new challenges and opportunities, influencing how children learn, socialize and play.

→ Changing family structures:-
Evolving family structure including single-parent household and blended families have contributed to shifting dynamics within childhood experiences. These changes have prompted discussions about the roles and responsibilities of parents and caregivers.

→ Social and Cultural values:-
Society's values and beliefs about childhood, including the importance of play, creativity and nurturing have evolved over time. Movements such as the Romantic era's idealization of childhood as a period of innocence have influenced how childhood is perceived.

→ Legal and Ethical Considerations:-
Child protection laws and international conventions like the United Nations Convention on the Rights of the Child have reinforced the idea that children have specific rights and need to be protected from harm.

Conclusions :-

The Concept of childhood is not fixed or universal one. It is subject to change, adaptation and reinterpretation as societies and cultures evolve. While some aspects of childhood may remain constant, the overall understanding and experience of childhood continually shift in response to historical, cultural and societal factors. Recognition and understanding these changes is essential for ~~policy makers~~, ~~educators~~, ~~parents~~ and society at large to provide appropriate support and care for children in each era.

12

नाम - सुमित कुमार

क्रमांक - 30

दिनांक - 24/09/23

Page - 2

18
16

24/09/23

Q. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से आप क्या समझते हैं ?
किसी भी शिक्षा व्यवस्था के लिए यह क्यों आवश्यक है ?

उत्तर :

Introduction - गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से तात्पर्य

एसी शिक्षा है जो हर बच्चे के काम आए। बच्चे के क्षमताओं के संपूर्ण

विकास समान रूप से उपयोगी हो। एक

शिक्षा गुणवत्तापूर्ण तब होती है

जब हो समाज की जरूरतों को

समान रूप से पूर्ण करती हो।

हर शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य सीखने

वाले को संज्ञात्मक विकास करना

रहता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एसी

शिक्षा है जिसमें न केवल संज्ञात्मक

विकास का ध्यान रखा जाता बल्कि

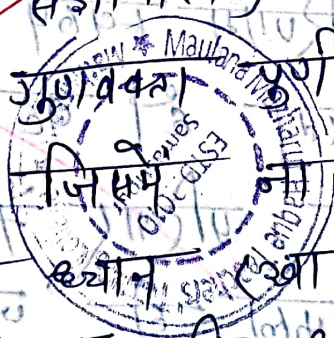
रचनात्मक विकास भी ध्यान रखा जाता है

इसमें बच्चों में सृजनकता का विकास

सर्वांगीण रूप से होता है। बच्चा

आत्मनिर्भर बनकर समाज और राष्ट्र

को विकासात्मक कार्य में अंतर्लक्षणीय



सहयोग देता है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा क्यों जरूरी है?

शिक्षा प्रणाली राष्ट्रीय विकास में सहायक होती है। सभी राष्ट्र इसका निर्णयन करते अपने राष्ट्र में शिक्षा व्यवस्था को लागू कर लोगों में नागरिकता विकसित किया करते हैं।

शिक्षा की खराब गुणवत्ता से भारत में शिक्षा के खराब परिणाम आ रहे हैं। जिससे बच्चे भ्रष्ट योग्य नागरिक बनने से बाहर हो जाते हैं। उन्हें अच्छी जॉब नहीं मिल पाती है परिणाम स्वरूप उनका जीवन गरीबी में गुजरती वह आने वाली पीढ़ी को भी अपने परिवार में अच्छी शिक्षा दिलाने में असफल हो जाते हैं वह राष्ट्र, देश और समाज का अच्छा मानव संसाधन नहीं बन पाते हैं। जब शिक्षा में गुणवत्ता आएगी तभी बच्चों में गुणवत्ता आएगी फिर हमारे

हमारे देश में भी गुणवत्ता वाले लोग होंगे।

किसी भी शिक्षा का उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही होता है क्योंकि शिक्षा ही वह हथियार है जिसके द्वारा मानव अपनी सारी समस्या का समाधान कर सकता है।

* सारी समस्या का एक समाधान *

* गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा पाकर *

* बन जाओ महान *

राष्ट्र निर्माण में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की अहम योगदान होता है। इसलिए सारी शिक्षा का उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा है।

Conclusion

गुणवत्ता शिक्षा वह शेरनी का दुश्मन है जो पीयेगा

वह दहारेगा। वह एक अच्छे नागरिक बनकर समाज, राष्ट्र में मानव कल्याण के लिए निर्यात आवश्यक

* 11/11/11 10 50 11/11/11 *

* 11/11/11 11/11/11 *

* ~~1316~~ ~~1416~~ ~~15~~ *

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

$\frac{10}{116} \times \frac{1}{3} = \frac{10}{348}$

$$\frac{24}{30} \quad 1 \frac{16}{30}$$

ਜਗਤ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਸਾਹਿਬ ਜੀ

$\frac{101101}{101101} \div \frac{101101}{101101} = \frac{101101}{101101}$

C-3

10/16

classmate

Date _____
Page _____

Date - 29/08/23

Time - 40M

Name - Stuti Singh

Roll no - 230002

Define Learning. Explain the different types of Learning.

शिक्षण
प्रयास
प्रशिक्षण

अधिगम

Learning : अधिगम से तात्पर्य नवीन ज्ञान का अर्जन है। ज्ञान या अधिगम कहलाता है। अधिगम एक निरंतर प्रक्रिया है। अधिगम नयी नयी चीजों को सीखना को कहते हैं। अधिगम विकास की प्रक्रिया है। व्यवहार में परिवर्तन लाना ही अधिगम कहलाता है।

According to Skinner -

* Learning is a progressive behaviour of adoption.

अधिगम कहलाता है। अधिगम के बहुत सारे विभिन्न प्रकार हैं जैसे -

→ Learning to be.

→ Learning to know.

→ Learning by doing.

→ Learning to live together.

अधिगम के प्रकार -

- (i) Factual Learning
- (ii) Associative Learning
- (iii) Conceptual Learning
- (iv) Perceptive Learning
- (v) Introductory Learning
- (vi) Specification Learning

(i) Factual Learning → इस अधिगम प्रक्रिया में हम किसी भी चीज को तथ्य के आधार पर समझते हैं।

* इस अधिगम प्रक्रिया में हम पूर्व की लेकर हम आगे बढ़ते हैं और उसी से तथ्य को समझते हैं।

* इस अधिगम में बच्चों को fact basis अधिगम कराया जाता है। इस अधिगम प्रक्रिया में तर्क आधारित बातें बताई जाती हैं।

(ii) Associative Learning →

इस अधिगम प्रक्रिया में हम शिक्षण को आसान बनाने हेतु उसे किसी चीज जो उस Stimulus से जुड़ा है उसे बताते हुए topic को समझाते हैं।

उदाहरण - अधिगम अधिगम का वह विधि जो जोड़कर के ही सीखई जाती है।

Conceptual Learning :-

इस अधिगम प्रक्रिया में हम जो भी पढ़ाते उसे concept यानी हम नवीन ज्ञान बच्चों का ज्ञान कर उसके base को समझ कर आगे का ज्ञान concept basis पर देते हैं।

यह अधिगम प्रक्रिया बच्चों के सोचने समझने की क्षमता को विकसित करता है तथा उन्हें तर्क संगत बातों को समझने में सहायता देता है।

Perceptive Learning -

इस अधिगम प्रक्रिया में हम पूर्व से की धारणा को लेकर आगे बढ़ते हैं और तब अधिगम करते हैं।

इस अधिगम प्रक्रिया में Perception यानी स्वयं को मानता के अनुसार चलते हैं।

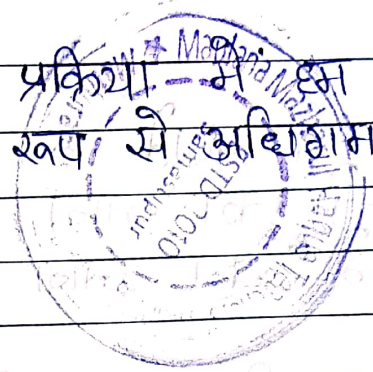
Introductive Learning

Introductive Learning इस अधिगम प्रक्रिया में हम पहले stimulus को रखते फिर उसके बारे में Introduction देते हैं फिर आगे की प्रक्रिया होती है।

इस अधिगम में हम Intro से आगे की ओर बढ़ते हैं।

(vi) Specification Learning -

इस अधिगम प्रक्रिया में हम किसी भी Stimulus को specified रूप से अधिगम कराते हैं।



- Speculative Learning

हम किसी भी Stimulus को Speculative Learning के माध्यम से अधिगम कराते हैं।

हम किसी भी Stimulus को Speculative Learning के माध्यम से अधिगम कराते हैं।

- Speculative Learning

हम किसी भी Stimulus को Speculative Learning के माध्यम से अधिगम कराते हैं।

Name - Shipra Snehil

Class - B.Ed. Ist year

Roll No. - 230020

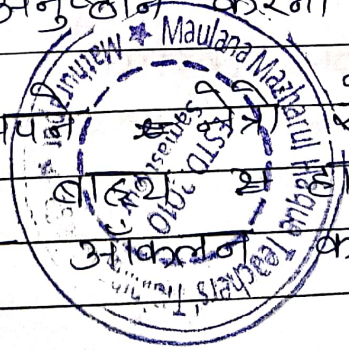
Course - C5.

- Q. आँकड़ा संग्रह की विधियों का वर्णन करते हुए अवलोकन विधि या स्नातकार विधि से स्पष्ट करें।

Introduction विज्ञान के क्षेत्र में Research करने के लिए आँकड़ों की आवश्यकता पड़ती है। मगर यदि हमें शोध में accuracy चाहिए तो आँकड़ों का एक सटीक होना आवश्यक है। इसी सटीक आँकड़ों को इकट्ठा करने और शोध में accuracy लाने के लिए हमें अनेक विधियों का उपयोग करते हैं। उनमें से ही एक विधि है अवलोकन विधि (Observation Method)।

अवलोकन Observation शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। यह अंग्रेजी के शब्द Observe से बना है जिसका अर्थ होता है देखना, ध्यान देना या अनुष्ठान करना।

अवलोकन, अपने आप से किसी का निरीक्षण कर उसके व्यवहार का अवलोकन करने प्रक्रिया है।



ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार

“घटनाओं का उसी प्रकार देखना या वर्णन करना जिस प्रकार से कार्य-कारण अथवा कारक के पारस्परिक संबंधों के अनुसार स्वभाविक रूप से घटते हैं।”

जहोदा एवं कुक के अनुसार

“अवलोकन केवल दैनिक जीवन की ही अत्यधिक व्यापक क्रिया मात्र नहीं है, यह वैज्ञानिक जाँच का भी एक प्राथमिक अंग है।”

अवलोकन सभी ज्ञान का प्रारंभ है। (Observation is the starting point of all knowledge).

इस विधि को हम चार रूपों में विभाजित कर सकते हैं-

Formal Observation (औपचारिक अवलोकन)

Informal Observation (अनौपचारिक अवलोकन)

Participant Observation (सहभागी अवलोकन)

Non-Participant Observation (असहभागी अवलोकन)

(i) Formal Observation

इस विधि में सामने वाले व्यक्ति (Respondant) को निरीक्षण होने के बारे में ज्ञात होता है। इसमें Researcher (शोधकर्ता) समय, जगह, तारीख, विषय आदि के बारे में पहले ही सूचित कर देता है। जो उत्तरदाता या जिनका भी निरीक्षण होना है वे सतर्क रहकर अपनी तैयारियाँ कर लेते हैं।

इसको हम एक उदाहरण से समझ सकते हैं -

उ एक शिक्षक को अगर एक वर्गकक्ष के व्यवहार के बारे में जाँच करना है और वे शिक्षक वर्ग में पहले ही सूचना दे देते हैं कि कल आपके व्यवहार और अनुशासन की जाँच होगी तो बच्चे अगले दिन अनुशासित होकर रहते हैं और शांति बनाकर अपने व्यवहार को दर्शाते हैं।

(ii) Informal Observation

इस विधि में समय पता होता है ही जगह और तारीख का अवलोकन अनुचानक लिया जाता है। Respondant को सतर्क होने का मौका न मिले और उसके स्वाभाविक व्यवहार का निरीक्षण हो सके।

(iii) Participant Observation

इस विधि में Researcher (निरीक्षणकर्ता) स्वयं निरीक्षण करने के लिए उसमें शामिल होता है और निरीक्षण करता है। और Respondant के व्यवहार, स्वभाव, मानसिक और शारीरिक क्षमताओं की जाँच करता है।

जैसे - खेल के मैदान में खुद उतरकर उसकी क्षमताओं की जाँच करना।

(iv) Non - Participant Observation

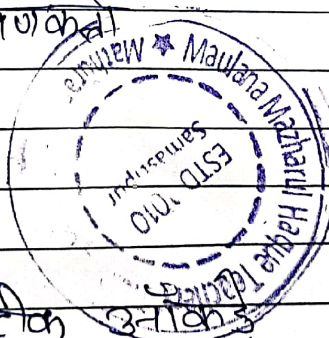
इस विधि में Researcher दूर रहकर निरीक्षण करता है जैसे spy करना, videography द्वारा, CCTV द्वारा।

Limitations

- (i) यह विधि महँगी होती है
- (ii) यह विधि में निरीक्षणकर्ता दौगा भी करे है

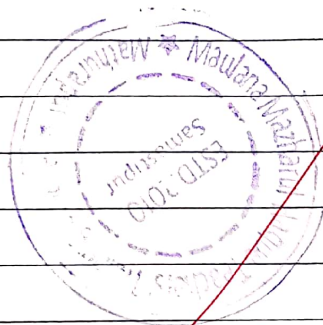
Objctives.

- (i) यह विधि सबसे सटीक बताई है।
- (ii) यह विधि पर Researcher ज्यादा विश्वास रखते है।



Conclusion

यह विधि में Researcher ने
बाहरी व्यवहार का जांच करते हैं और
आँकड़ा इकट्ठा करते हैं। और इस
विधि सबसे उत्तम विधि माना जाता है।



6/8

Signature
8-10-23

COURSE Name - C-6

Date → 21/08/23

Name → Krishlay Kumar

Full marks → 8

Class Roll no → 72

7/8

21/08/23

Q. Gender एवं Sex की भूमिका को स्पष्ट करते हुए उसके अंतः संबंध को स्थायी स्पष्ट करें।

Ans:-

Gender शब्द भूमिका के रूप में प्रयुक्त होती है। जेण्डर में उसका निर्धारण व्यक्ति के द्वारा व्यक्तित्व या सामुहिक रूपों में किया जाता है। सामुहिक रूप से तात्पर्य यह है की कुछ विशेषताएँ या समूह के व्यक्तियों के द्वारा यह एक अवधारणा बनी हुई है, जो की यह इसको बहुत ही स्थापक रूप से प्रभावित करती है, लोगों की मौलिकता उसके विषय में बहुत ही उग्र दिखाई देता है। इसका निर्धारण कुछ धर्म के प्रवर्तकों के द्वारा किया जाता है धर्म के प्रवर्तक इसको एक अलग / विशेष तौर पर इसका निर्धारण करते हैं, जो गलत है, हमलोगों में कहीं ना कहीं ज्ञान की कमी ही है, जिसके कारण कुछ धर्म के ठीकदोसों को यह विशेष अवसर मिल जाता है, हमलोगों इस धर्म के ठीकदोसों या इंसानों इसको बचाके रखने होगा और कुछ समाज के बुद्धिजीवी के द्वारा भी इसका संचालन स्थापक रूप से किया जा रहा है, जो की ये समाज की कुरीतियों को दर्शाती है। हमलोगों को इस समाज के कुछ लोगों से सावधानी बरतनी होगी एवं जेण्डर में प्रभावित होकर धर्म की योग्यता भी मानी जाती है इसमें हम सबको यह सोचना वह समझना होगा की कहीं ना कहीं ये अवधारणा पूर्णतः गलत है। परन्तु लोग इस पर इतना ह्यान नहीं देते हैं। और इसके कारण इसको कबरा मिलता है।

ये सभी तरह के समस्याओं से उत्पन्न व्यक्तियों को
अपने सूचक में रखा जाता है।

समाज में समाजीकृत परिवर्तन एक प्रक्रिया है यह
समय दर समय बढ़ता रहता है जो की समाज
के परिवर्तन का ही एक भाग है। समाज में
समाजीकरण एवं अवधारणा से जुड़कर संचालित होते
होते हैं। यह समाजीकरण एवं अवधारणा में ही
समाज की बहुत सारी अच्छाइयाँ एवं बुराइयाँ
भी छिपी हुई रहती समाजीकरण में हमेशा नई-
नई समाजीकरण व उसकी अवधारणाएं समय
पर बढ़ती रहती हैं जो इस समाजीकरण
व इस अवधारणा को वर्तन में मढ़ करती हैं।
हम जानते हैं, की समाजीकरण की अवधारणा में
परिवार, समुदाय, व्यक्ति विविध के रूप में प्रभावी
करते हैं, परिवार से तात्पर्य यह है, की समाजीकरण
में परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जो व्यक्तियों
को समाज में एक विशेष पहचान दिलाने में मदद
करता है। समुदाय से यह तात्पर्य है की लोगों
का या व्यक्तियों का कुछ विशेष समूह जो की
समुदाय बनती है यह भी प्रभावी करती है। विद्यालय
एवं विद्यालय से भी लोगों में विविध रूप से
प्रभावी करती है, जो की विद्यालय एक महत्वपूर्ण
योगदान होता है। तथा औसपरस इससे भी विविध
प्रभाव पड़ता है। जो की इन सब मिलके समाज में

समाज के लोगों का विकास करने में महत्वपूर्ण योगदान करती है। विकास एक परिवर्तनशील प्रक्रिया है। जेण्डर भी इसी विकास पर आवारीत होता है। विकास हर क्षेत्र में एक दृष्टिकोण से दूसरे दृष्टिकोण में परिवर्तित होती रहती है। जेण्डर की सकारात्मक सोच की अवधारणा होती है। जहाँ तक शिक्षा के माध्यम से जेण्डर की भाँसीक्षा बढ़ती रहती है। यहाँ बढ़ने की प्रक्रिया बृद्धिवादी बर्ग की है। ना की प्राकृतिक है।

Gender

- जेण्डर एक सामाजिक व्यवस्था है। जिसकी संरचना व विकास समाज के लोगों द्वारा किया जाता है।

- जेण्डर एक प्रेनीवद्ध को धारण करता है। जैसे :- माहसल्ला, पितृसल्ला

- जेण्डर परिवर्तनशील होता है।

- जेण्डर एक प्रभावपूर्ण कारक होता है।

जैसे :- रुढ़िवादिता, बाला, पुरुषवाद

Sex

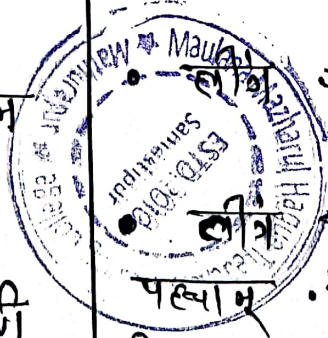
- लिंग एक जैविकीय विकास या संरचना है। जो कभी बदला नहीं जा सकता है।

अपवाद :- जैविकीय विकास एवं संरचना की प्रक्रिया बदल रही है।

- लिंग प्रेनीवद्ध नहीं होता है। बल्कि शुद्ध आवारीत संरचना होती है।

- लिंग परिवर्तनशील नहीं होता है।

- लिंग की भूमिका आंतरिक पहलुओं के रूप में वर्णित किया जाता है।



• जेण्डर एड ऐसी मानसिकता है जो जाना या अभिप्रेरणा से या अविवेकी से बढली जा सकती है।

• लींग एड हार्मोनिक संस्कार पर पुर्णतः आधारित है।

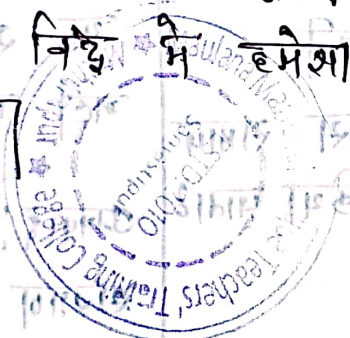
उन्मुखता और संवेद से यह स्पष्ट होता है की यह एक भूमिका के रूप में प्रयुक्त होती है।

यह जेण्डर की सोच एवं विचार को प्रेरित करता है। जेण्डर की मौसमीता पर होती है।

पीढ़ीय की पहचान लेनीकता तक ही सीमित रहती है।

यह आवश्यकता के अनुरूप करती है।

जेण्डर केन्द्र विन्दु में हमेशा व्यापक दृष्टिकोण में बना होता है।



• जेण्डर एड ऐसी मानसिकता है जो जाना या अभिप्रेरणा से या अविवेकी से बढली जा सकती है।

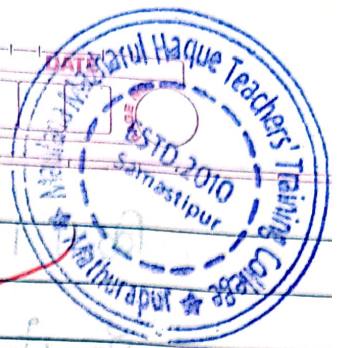
• लींग एड हार्मोनिक संस्कार पर पुर्णतः आधारित है।

उन्मुखता और संवेद से यह स्पष्ट होता है की यह एक भूमिका के रूप में प्रयुक्त होती है।

यह जेण्डर की सोच एवं विचार को प्रेरित करता है। जेण्डर की मौसमीता पर होती है।

पीढ़ीय की पहचान लेनीकता तक ही सीमित रहती है।

यह आवश्यकता के अनुरूप करती है।



Name - Neha Kumari

Class - B.Ed (T) 'A'

Roll no - 230035

Course - Physical science pedagogy

Date - 30/11/23

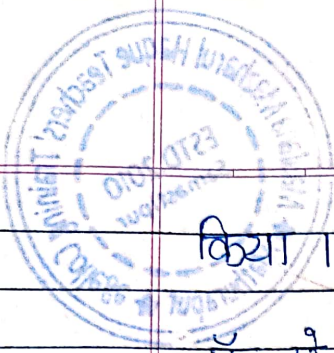
Que:- भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में भारतीय वैज्ञानिकों के योगदान की विस्तृत चर्चा करें।

Ans:- भारतीय वैज्ञानिकों ने भौतिकी जगत में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भौतिक विज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में जैसे- यांत्रिकी, प्रकाश, ध्वनि और रासायनिक प्रतिक्रियाएँ, गणितीय इन परिघटनाओं को महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भौतिक विज्ञान में वैज्ञानिकों का योगदान:- भौतिक विज्ञान में वैज्ञानिकों का महत्वपूर्ण योगदान है। एक शानदार उदाहरण के रूप में हम सर आइज़ेक न्यूटन के बारे में सोच सकते हैं। न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के खोज किए। एक दिन न्यूटन साहबों सेब के पेड़ के नीचे बैठे थे। पेड़ से सेब गिरा और वह इस बात पर चिंतन मगन किए उसके बाद गुरुत्वाकर्षण की खोज हुई।

भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में सी. वी. रमन की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। सी. वी. रमन को सन 1930 ई. में भौतिकी के क्षेत्र में पुरस्कार मिला था। इन्होंने टी. वी. रेडियो तथा इंटरनेट की खोज की।

चार्ल्स कोपेन का भी भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है। इन्होंने क्वांटम थ्योरी का आविष्कार



किया।

डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम के भी भौतिक के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है। उन्हें बहुत सारे नोबेल पुरस्कार भी मिले। इन्होंने मिसाइल का आविष्कार किया। जिसके कारण उन्हें मिसाइल मैन भी कहा जाता है।

शरफोर्ड ने परमाणु के Nuclear का खोज किए।

इन वैज्ञानिकों के साथ भारत ने भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में बहुत योगदान दिए हैं।

जब भी कोई नई तकनीक खोज हुई है। यह नए संसाधनों, तकनीकों और उद्योगों को बढ़ावा मिली है। और उस प्रक्रिया को नियंत्रित कामों में सहायता प्रदान करती है।

आइंस्टीन साहब ने प्रकाश विद्युत प्रभाव की खोज की। जिससे भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में काफी सहूलियत हुई है।

भौतिक विज्ञान के क्षेत्र बहुत सारे ऐसे तकनीक का प्रयोग होता है जो भारतीय विज्ञानिकों द्वारा निर्मित है। और बहुत सारे ऐसे उपकरणों का भी उपयोग देशों से लेकर विदेशों तक के लोग कर रहे हैं।

हाल ही में एक मिसाइल चंद्रयान-3 launch हुआ जिसमें हमारे देश के बहुत सारे वैज्ञानिकों द्वारा बनाया गया है।



भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में न्यूटन का बहुत बड़ा योगदान है। इन्होंने बल की खोज की। और फेराडे ने विद्युत धारिता की खोज की। भौतिक विज्ञान के वैज्ञानिकों ने अमीटर तथा वोल्टमीटर के भी आविष्कार किए। जिससे विद्युतधारा मापने में सहायता मिलती है।

सी० पी० रमन ने टिंडल effect का आविष्कार किया। और सर जे० जे० थॉमसन ने इलेक्ट्रॉन का आविष्कार किया। भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में ही प्रकाश से संबंधित परावर्तन तथा अपवर्तन का नियम दिए।

निल्कर्ष :-

निल्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि भौतिक विज्ञान के जगत में वैज्ञानिकों का महत्वपूर्ण भूमिका है। जैसे - कृषि से संबंधित, अर्थव्यवस्था से संबंधित, प्रकाश से संबंधित, खाद्य पदार्थ तथा प्रकाश के परावर्तन, अपवर्तन, टिंडल प्रभाव, धारिता तथा रासायनिक विज्ञान में भी बहुत सारे हैं। उक्त सभी भाषा न्यूक्लियर विज्ञान से संबंधित है।

Name - Stuti Singh

Roll - 230002

Class - B.Ed Ist Year

Subj - E.P.C 'I'

Date - 29-11-23



07
-08

Describe the different types of reading skills and explain its strategies

Reading Skill is a way to read within the text or interact within the text understand the meaning of written text analyse it to undergo within the deeper meaning.

Reading Skill is the third skill of the all skills. In short, LSRW.

L - Listening Skill

S - Speaking Skill

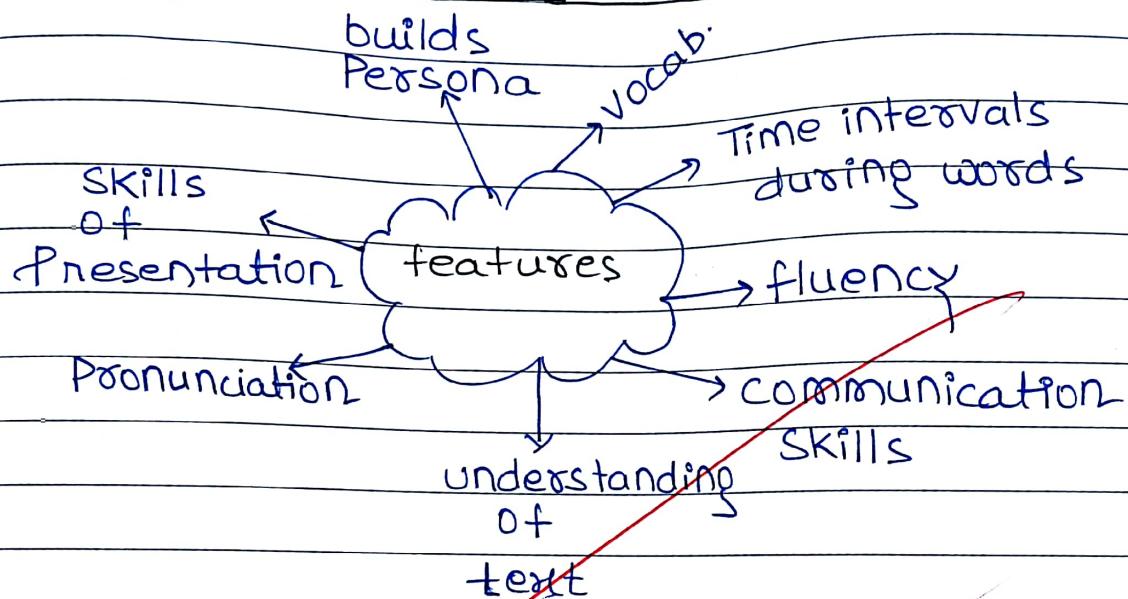
R - Reading Skill

W - Writing Skill

Reading Skill enables us to go through a text, and emit what we perceive after reading the text. Reading Skill is a major skill for the development of an individual, we perceive this skill from the very beginning of our lives. Once we start

reading there is no going back in terms of education. Reading skill, we inhibit it after grasping the very basis of a subject its matter.

Meaning and features of Reading Skill



* Fluency :→ Once we pertain knowledge about words, its pronunciation we become more fluent in reading.

→ fluency is basic feature of reading skill.

* Pronunciation :→

In reading skill pronunciation is the basic, without correct pronunciation we can not have proper reading skill.

* Skill of presentation :

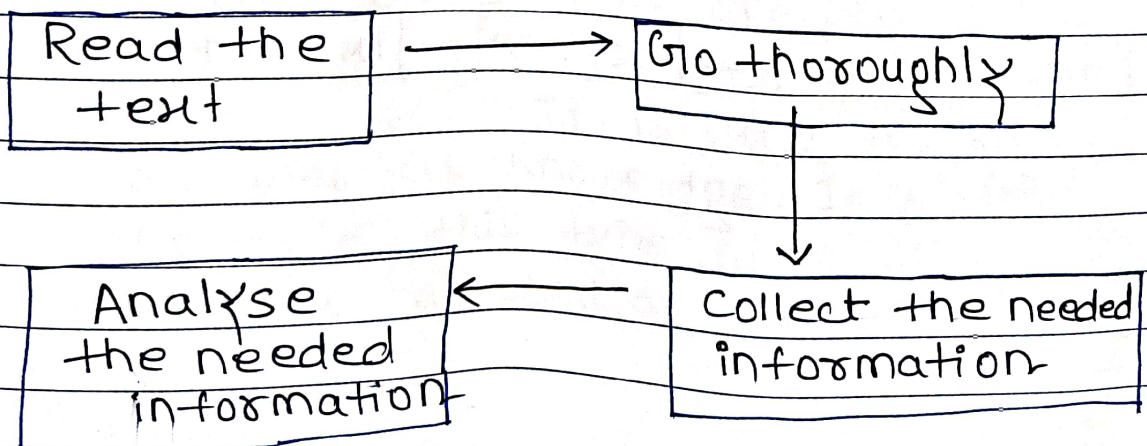
Reading Skill, this skill makes a person more accurate, more confident and with correct pronunciation one can have the best presentation skill.

* Types of Reading skills

- Skimming
- Scanning
- Intensive
- Extensive

• Skimming

Skimming is the thorough going within a text, it can also be said as the a gist reading. Thorough going within a text





● Scanning :→

Scanning is done for the required information about a topic within the text. This requires quickness.

It demands proper attention, analytical way of Reading as well.

- # On demand scanning
- # Auto scanning.

● Intensive

This type reading demands proper attention. It is done majorly for one's attainment of enjoyment. It demands us all within the text. It is done for knowledge of a subject as well.

● Extensive

Extensive Reading is the reading within with more than one subject on a topic. We consult different demeaning on books, about that specific topic.

Read the text → Analyse → compare data

It is done for enjoyment as well as knowledge. It is done for one self, this type of reading demands time as well as attention.



*Strategies of reading skill

- We can start the reading from the very basic of pronunciation, and aloud reading.
- We should have the understanding of comma, punctuations, colons, semi-colons take that time of interval.
- We can enhance by having proper fluency, develops vocabulary.
- On the other hand confidence makes our reading very organic. We should have the accuracy.
- Reading skill can be developed within self.

Conclusion

It is clear from the above content that Reading skill is a must in our life. Reading skill can be developed with proper guidance and the actual time we give on it.

Reading skill enables us have the proper meaning within the text as well as it glorifies our persona, and our aura, so it is basis we can say.

Ans 2
29/10

EPC-2

Name → Stuti Singh

Roll → 230002

Course → E.p.c '2'

Date → 29-10-23

* Describe the concept of drama. How it is relevance for education.

Introduction : Drama refers to present any theme or realistic situation by an actor or actress on stage, this presentations on the stage is called drama. In modern times this presentation has changed over a course indeed drama in teaching the best way of teaching.

Drama can be referred as the presentation of a story in a way that it evokes the moral qualities, ethical qualities, it changes one as an individual and develop's one's personality.

The true representations of any act can be very helpful in education. because whatever we see by ourself can go in our permanent memory, indeed it helps us to make the teaching go in our permanent memory.

* Meaning of Drama

The word drama comes from the word 'dram' mean to act on

or to move. Drama, generally is an act of true representations of story.

Dran = to act on
to move

* characteristics of Drama

Drama consists of :

- Theme
- Characters
- Background sounds
- Background artist
- Lead

* concept of drama

There are generally 3 types of drama :

- (i) Spiritual concept
- (ii) General concept
- (iii) ~~sp~~ Education concept

(i) Spiritual concept :

These types of Drama usually have a concept of 'spirituality' that is the concept ~~not~~ related to worship, God, Goddess.

We can also include the 'Mahabharat' and 'Ramayana' in its example.

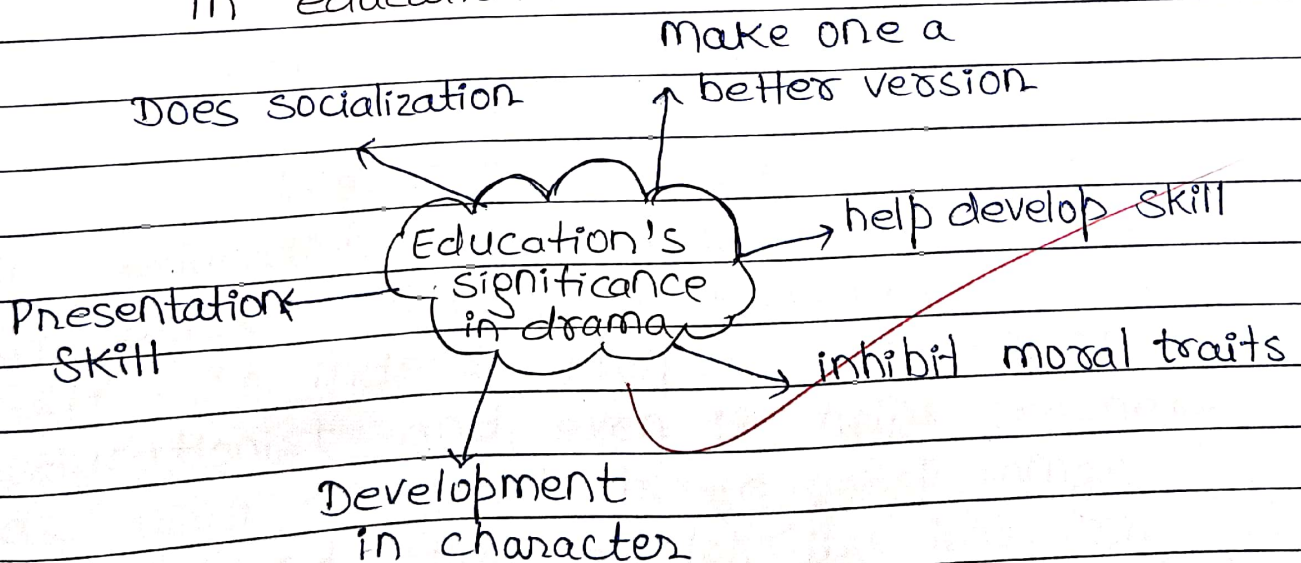
•(ii) General concept :

In the General, concept of drama it deals with day to day topic related to moral, ethical topic. This type of dram is the representation of general life.

•(iii) Educational concept :

In Education, Drama plays a vital role, as the thing we see directly we assimilate in ourself. It helps us in education very vitally :-

These are the key structure how it helps in education :



* Relevance of drama in Education :

- ⇒ It develops a personality.
- ⇒ It develops presentation skill.
- ⇒ It develops moral and ethical values in oneself.
- ⇒ Drama gives us the art of presentation or presenting our emotions.
- ⇒ It develops us sympathically, as well as empathically.
- ⇒ It evolves us to be better version of ourself.

* Conclusion :

7 We can sum up by saying that in education drama plays a vital role. It definitely develops a personality of oneself. It indeed, Help us develop as a educationist and even it helps teachers as well as students to grasp things quickly and store it for life long. So, 'Drama is the life line of Education'.

Name :- Anshu Raj
Class :- B.Ed Ist Year
Roll :- 230068

Date :- 30/10/23
Marks :- 8
Sec :- 'B'

classmate
Date _____
Page _____

Course :- EPC 3 - Critical Understanding of ICT

Q → What is computer? How can they classify? Also describe generations of computers.

Ans → In modern days, computer is an integral part of our daily lives, revolutionizing the way we work, communicate and entertain ourselves. From desktop to laptop, tablets to ~~mobile~~ smart phones, computers come in various forms, yet many people are still unfamiliar with their inner working and potential.

Computers have the ability to store, process, and manipulate data. The term 'computer' is derived from the Latin word 'computare' which means 'to calculate'. A computer is made to run programs and apps by using hardware and software. It also has a memory to store data, program, and what they produce.

Definition :-

A computer is an electronic device wherein we need to input raw data to be processed with a set of programs to produce a desirable output.

Classification :-

Computers can be classified in two ways.

(1) According to based on their data handling capacity :-

- (a) Analog computers
- (b) Digital computers
- (c) Hybrid computers

(2) According to based on their sizes :-

- (a) Micro-computer
- (b) Mini-computer
- (c) Main-frame computer
- (d) Super computer
- (e) Work station

→ Analog computer :- The main function of Analog computer is to process data. The data that changes frequently and does not have discrete values are called the data and analog computers are used at places where we have approximate values.

→ Digital computer :- Digital computers are designed in a way so that they can perform calculations and logical operations at high speed. These computers input raw data and with the help of the programs stored in their memory, it gives the final output. Digital computers can only understand binary language i.e., 0 and 1.

→ Hybrid computers :- Hybrid as the name suggests it is a mixture of both analog and digital computers. Hybrid computers are as fast as analog computers and also has accuracy like that of digital computers.

Generations of computers:-

(1) First Generation computers (1940s - 1950s) -

The first generation computers used vacuum tubes for processing and magnetic drums for storage. They were very large, expensive and ~~unreliable~~. unreliable.

(2) Second Generation computers (1950s - 1960s) -

The second generation computers replaced vacuum tubes with transistors making them ~~more~~ smaller, faster and more reliable. Magnetic core memory was also introduced, which was faster and more reliable than ~~magnetic drums~~.

(3) Third Generation computers (1960s - 1970s) -

It used integrated circuits, which allowed for even smaller and faster computers. They also introduced magnetic disk storage and operating systems.

(4) Fourth Generations Computers (1970s - 1980s) —
 It saw the introduction of microprocessors which makes personal computers possible.
 They also introduced graphical user interface.

(5) Fifth Generations Computers (1980s - Present) —
 It still going on and is focused on artificial intelligence and parallel processing. This generation also saw the development of mobile computing and the internet.